शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-१

माह-जुलाई २०१८

मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाएं। बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं।।

शिक्षा का उत्थान

शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-१

माह-जुलाई २०१८

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. सर्वेष्ट मिश्र
सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक
प्रांजल सक्सेना
आनन्द मिश्र

सह सम्पादक
डॉ० अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	6–7
मिशन परिचय	8–11
मिशन गीत	12
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	13–23
निन्दक नियरे राखिए	24
टी.एल.संसार–राज्य राजधानी एक्सप्रेस	25–26
अंग्रेजी शिक्षण की समस्याएं एवं समाधान	27
शिक्षण गतिविधियां	28
नवाचार–स्वलेखन कार्य	29
प्रेरक प्रसंग	30
सद्विचार	31
बाल साहित्य	32
बच्चों का कोना	33–34
शीर्षासन	35
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	36–37
माह का मिशन	38
कस्तूरबा विशेष	39
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	40
टीचर्स क्लब कार्नर	41–42
सामान्य ज्ञान	43
शिक्षण तकनीकी	44
महत्वपूर्ण दिवस	44

शुभकामना संदेश

बेसिक शिक्षा बच्चे की आधारभूत नींव है। हम सभी बेसिक के विद्यालयों में ही पढ़कर यहाँ तक पहुँचे है। आज उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए **मिशन शिक्षण संवाद** के जो किया–कलाप हैं उनकी शब्दों में तुलना नहीं की जा सकती। मुझे प्रसन्नता है कि मिशन शिक्षण संवाद लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। मुझे यह जानकर भी बहुत खुशी हुयी कि प्रथमवार **शिक्षण संवाद** पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है, मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका प्रदेश के सभी शिक्षकों में नवीन उर्जा का संचार करेगी जिससे वह अपने क्षेत्र में और बेहतर कार्य कर सकेंगे। मैं इसके माध्यम से सभी शिक्षक बन्धुओं व बहनों से निवेदन करना चाहूँगा कि बच्चों को पढ़ाने के साथ–साथ उन्हें गढ़ने का भी प्रयास करें और निम्न सूत्र को अपने जीवन में उतारें–

कम रफ्तार – बार–बार

लगातार– हरबार

बेड़ापार

सभी को बहुत–बहुत शुभकामनायें

महेश चन्द्र पाठक (से0नि0 प्र0अ0)

राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक

जनपद बदायूँ

मो0 9761362520

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

सम्पादकीय

मिशन शिक्षण संवाद ने विगत कुछ वर्षों से अपने एक सूत्रीय उद्देश्य "शिक्षा का उत्थान और शिक्षक का सम्मान" को सफल बनाने और जन–जन तक पहुँचाने का मिशन आप सभी शिक्षक भाई बहनों के सक्रिय सहयोग से शुरू किया हुआ है। जिसमें आप सभी ने बड़े ही उत्साह और प्रेरक ढंग से सक्रिय सहयोग किया है। इस सहयोग ने आज बेसिक शिक्षा में सकारात्मक ऊर्जा का संचार शुरू कर दिया। इसी ऊर्जा के माध्यम से आप सभी सहयोगियों से अनेकों ऐसे प्रेरक और अनुकरणीय प्रयास प्राप्त हो रहे हैं जो हम जैसे अनेकों शिक्षक साथियों के लिए मील के पत्थर के समान उपयोगी और मार्गदर्शक साबित हो रहे हैं।

मिशन शिक्षण संवाद परिवार को बताते हुए यह खुशी हो रही है कि अब मिशन शिक्षण संवाद आप सभी के द्वारा किए जा रहे अनुकरणीय, उपयोगी और प्रेरक प्रयासों का संकलन कर एक मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद के रूप में शुरू कर रहा है। जो बेसिक शिक्षा के उत्थान और हम सब द्वारा किए जा रहे कार्यों के सम्मान के साथ एक दूसरे से सीखने–सिखाने के लिए उपयोगी होगी।

आशा करते हैं आप सभी शिक्षक साथियों और देश की प्रगति का आधार बेसिक शिक्षा के उत्थान के द्वारा राष्ट्र को मजबूत करने वाले आदरणीय जनों का आशीर्वाद, सहयोग और मार्गदर्शन सदैव मिलता रहेगा। जिससे हम सबको सतत् आगे बढ़ कर सेवा करने की सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती रहेगी।

आपके आशीर्वाद और मार्गदर्शन का आकांक्षी

विमल कुमार

मिशन शिक्षण संवाद

विचारशक्ति

बुनियादी शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता का वाहक बन रहा मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद उत्तर प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत स्वयंसेवी और नवाचारी शिक्षकों का एक ऐसा समूह है जो प्रदेश की बुनियादी शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता का वाहक बनकर उभरा है। मिशन शिक्षण संवाद के बैनर तले प्रदेश के स्वयंसेवी शिक्षकों ने अपने स्कूलों को अपने व्यक्तिगत और जन सहयोग के प्रयासों से मॉडल स्कूलों के रूप में विकसित किया जहाँ बच्चों को गुणवत्ता परक शिक्षा के साथ ही विभिन्न तरह की सुविधाएं भी बिल्कुल निःशुल्क मिल रही हैं। मात्र 2 वर्षो में ही मिशन शिक्षण संवाद के शिक्षकों ने जिस लगन से अद्भुत कार्य किया है उससे तो अब प्रदेश भर के शिक्षा विभाग के व प्रशासनिक अधिकारी उनके कायल हो चुके हैं। मिशन के नवाचारी शिक्षक न केवल अपने स्कूलों को बेहतर बना रहे हैं। बल्कि पूरे प्रदेश में राज्य स्तरीय, क्षेत्रीय, जनपद स्तरीय और ब्लॉक स्तरीय शैक्षिक गुणवत्ता उन्नयन कार्यशालाओं का आयोजन कर शिक्षा में बेहतरी का संदेश फैला रहे हैं। मिशन के सद्प्रयासों और कार्यों को प्रदेश के बेसिक शिक्षा निदेशक श्री सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह जी व अन्य उच्च अधिकारियों का भरपूर सहयोग व समर्थन मिल रहा है। निदेशक महोदय स्वयं इन शिक्षकों के कार्यों को सोशल मीडिया पर लगातार उत्साहवर्धन करते हैं। अब तो प्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री श्री योगी आदित्यनाथ जी से लेकर प्रदेश के सभी जिलों के जनप्रतिनिधियों और शिक्षा विभाग तथा दूसरे प्रशासनिक अधिकारियों तक मिशन की गूँज पहुँच चुकी है। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने मिशन की पहली पत्रिका को गोरखपुर में अपने कर कमलों से आशीर्वाद दिया। आदरणीय निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह जी ने इसका लखनऊ में पत्रिका का विमोचन किया। वाराणसी के कमिश्नर श्री दीपक अग्रवाल जी ने भी वाराणसी में पत्रिका को सराहा। अब तो मिशन परिवार की उड़ान ने गति पकड़ ली है और हम स्वयंसेवी शिक्षकों को लेकर स्वामी विवेकानंद और डॉ० कलाम के सपनों को साकार करने की ओर बढ़ रहे हैं।

मिशन के महत्वपूर्ण कार्य जो नियमित किए जा रहे हैं:–

1– प्रदेश के स्कूलों में बेहतर कार्य कर रहे अनमोल रत्नों की खोज, उनके कार्यों का संकलन और उसका प्रकाशन कर उन्हें सम्मानित करना।

2– गुणवत्ता उन्नयन हेतु ब्लॉक, जिला, मंडल व प्रदेश स्तरीय कार्यशालाओं का आयोजन।

3–प्रदेश के हजारों स्कूलों के लिए प्रतिदिन एक जैसे हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में श्यामपट्ट संदेश तैयार कर उसे स्कूलों के ब्लैक बोर्ड्स तक पहुँचाने का सफलतम प्रयास।

4–विचारशक्ति में शिक्षा से जुड़े समसामयिक मुद्दों और विषयों पर लेख, कविताओं का प्रकाशन।

5–सांस्कृतिक समूह द्वारा परिषद में संचालित पाठ्यपुस्तकों की कविताओ को संगीतमय बनाकर उसका प्रकाशन और कक्षाओ में प्रयोग।

6– मिशन की कहानी प्रस्तुतिकरण टीम द्वारा पाठ्यपुस्तकों की कहानियों का रोचक प्रस्तुतिकरण व उसका प्रयोग।

7– मिशन की योगा टीम द्वारा योग की विभिन्न विधाओं के माध्यम से स्कूलों और आम जनमानस तक पहुँचाना।

8–मिशन की एडमिन टीम द्वारा स्वयंसेवी शिक्षकों को कार्यक्षेत्र में आने वाली समस्यायों से विभागीय उच्चाधिकारियों को अवगत कराते हुए उसके निदान का प्रयास करना।

9– पाठ्यक्रम के अनुसार माह के अंत में मासिक परीक्षा का आयोजन जिसमें शिक्षकों द्वारा तैयार किया गये प्रश्नपत्र पर पूरे प्रदेश में मिशन से जुड़े शिक्षक परीक्षा कराते हैं।

10– सप्ताह का प्रेरक शिक्षक के अंतर्गत एक आदर्श शिक्षक को प्रेरणास्रोत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

11– माह जुलाई 2018 से मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद का ऑनलाइन संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें अनमोल रत्नों के परिचय से लेकर विभिन्न शिक्षकों, अधिकारों के विचार भी समाहित हैं।

12– टीएलएम समूह द्वारा प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक विषय से सम्बंधित सहायक सामग्री को बनाने की विधि समेत मिशन के पटल पर प्रदर्शित किया जाता है।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
टीम सम्पादक,
प्रधानाध्यापक
आदर्श प्राथमिक विद्यालय
मूड़घाट, बस्ती

मिशन–परिचय

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाए
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद क्या?

मिशन शिक्षण संवाद हम सब शिक्षकों को आपस में एक साथ जोड़कर एक–दूसरे के आपसी सहयोग से सकारात्मक सोच की शक्ति से बेसिक शिक्षा को नई पहचान दिलाने का प्रयास करना है, तथा आपसी सीखने–सिखाने की स्वयंसेवी और स्वैच्छिक पहल है।

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान संवाद शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य क्या है?

शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी के हित और सम्मान की रक्षा आपसी सहयोग से करना। जिसका एक सूत्रीय उद्देश्य है–

"शिक्षा का उत्थान और शिक्षक का सम्मान"

मिशन शिक्षण संवाद की पहचान क्या है?

मिशन शिक्षण संवाद की पहचान उसका चिह्न है जो हम सबको संदेश देता है कि–

आजाद भारत के आजाद परिंदे है हम ,जो कलम की ताकत से हम सब हाथ से हाथ मिलाकर शिक्षा का उत्थान और शिक्षक के सम्मान की नींव मजबूत करेंगे।

मिशन शिक्षण संवाद के कार्य क्या है?

मिशन शिक्षण संवाद के चार प्रमुख कार्यों को सकारात्मक एवं सहयोगात्मक सोच की प्रेरक शक्ति से प्रोत्साहित करना है।

1.परिवेश– हम सब का यथासम्भव प्रयास होगा कि विद्यालय के परिवेश को आकर्षक और सकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र बनाने के लिए आपसी सहयोग और जनसहयोग से सदैव प्रयासरत रहेंगे।

2.पढ़ाई– विद्यालय और शिक्षक की पहचान पढ़ाई को किसी भी परिस्थिति में प्रथम कार्य समझते हुए गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए प्रयासरत रहेंगे। क्योंकि शिक्षण ही शिक्षक का अस्तित्व होता है। इसलिए शिक्षा के उत्थान के लिए हम सब अपने प्रयास एक दूसरे से अवश्य साझा करेंगे।

3.प्रचार– हम सब मिलकर एक–दूसरे के सहयोग से विद्यालय की गतिविधियों और उपलब्धियों तथा सामाजिक स्तर पर किये गये कार्यों को यथासम्भव सम्पूर्ण समाज के बीच प्रचार और प्रसार करेंगे। जिससे समाज के बीच बन चुकी बेसिक शिक्षा एवं शिक्षक की नकारात्मक छवि को, सकारात्मक और सम्मानित छवि में बदलते हुए सामाजिक विश्वास को मजबूत कर सकेंगे। इसके लिए भय, संकोच और शर्म छोड़ एक दूसरे के सक्रिय सहयोगी बनेंगे।

4.पॉवर– उपर्युक्त कार्यों की सफलता के लिए हम सब बिना किसी पद, प्रतिष्ठा की उम्मीद के समानता के सिद्धान्त को अपनाते हुए संगठित होकर एक–दूसरे के सहयोगी बनेंगे। जो प्रत्येक जनपद में टीम भावना से शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी के हित और सम्मान की रक्षा के लिए काम करेंगे। आपस में हम सब केवल सहयोगी कहलायेंगे तथा सामूहिक रूप से मिशन शिक्षण संवाद परिवार कहलायेंगे। हम सब सहयोगी सर्वदलीय, निर्दलीय, स्वैच्छिक स्वयंसेवी रूप से केवल शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी के हित और सम्मान की रक्षा के उद्देश्य पर काम करेंगे।

मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद फेसबुक पेज, समूह, ब्लॉग, ट्विटर, व्हाट्सएप एवं यू–ट्यूब एवं वेबसाइट

के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे प्रेरक प्रयासों को प्रचारित कर रहा है।

फेसबुक पेज–मिशन शिक्षण संवाद
https://m.facebook.com/shikshansamvad/

फेसबुक समूह–मिशन शिक्षण संवाद उ0 प्र0
https://www.facebook.com/groups/118010865464649/

मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग
https://www.shikshansamvad.blogspot.in

Twitter(@shikshansamvad)
https://twitter.com/shikshansamvad

यू ट्यूब–मिशन शिक्षण संवाद
https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

व्हाट्सएप नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

मिशन अभियान गीत

आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ायें ॥
सदा अच्छे काम करें हम, दूसरों का आदर्श बन जायें ॥
शिक्षण हो आदर्श हमारा, शिक्षण को आदर्श बनायें ॥
छात्र–रुचि का ध्यान ररवें हम, नवाचार को हम अपनायें ॥
रवेलों का महत्व भी समझें, हँसी रवुशी कुछ रवेल रिवलायें ॥
जो अच्छा हो वो अपनायें, जो बेहतर हो सीरवें–सिरवायें ॥
अधिकारों की लड़ाई लड़े हम, पर कर्तव्य निभाते जायें ॥
आलोचनाओं से ना घबरायें , लक्ष्य निश्चित कर बढ़ते जायें ॥
शिक्षक की गरिमा हम समझे, सच्चे शिक्षक हम बन जायें ॥
आओ हाथ से हाथ मिलायें , बेसिक शिक्षा का मान बढ़ायें ॥

डा. रवुर्शीद हसन , स.अ.
पूर्व मा. वि. हस्तिनापुर ,
बड़ागाँव, झाँसी, उ.प्र.

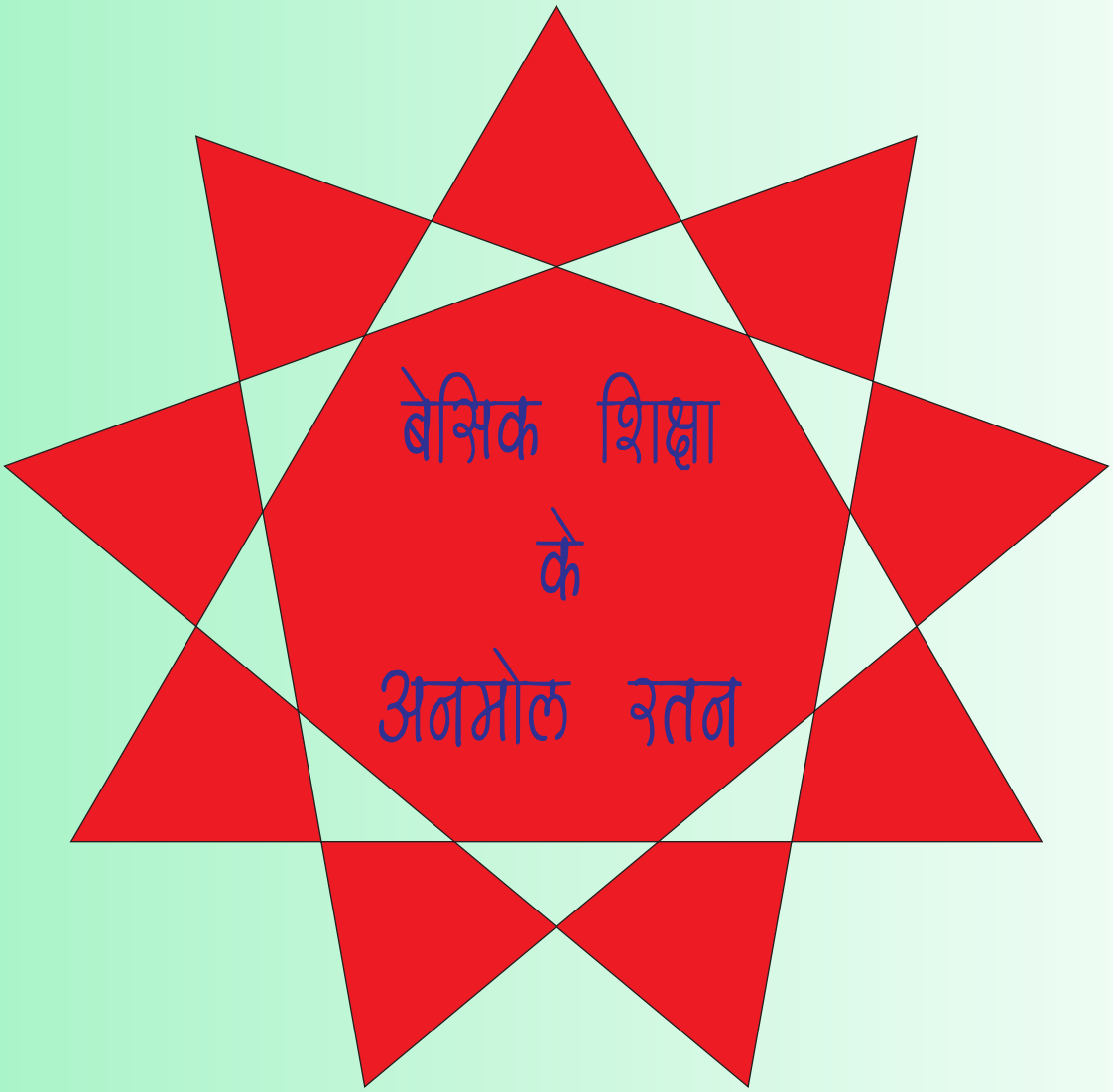
बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

अनमोल रत्न–1

कृष्ण मुरारी उपाध्याय
Principal EMPS Patha,
महरौनी, ललितपुर

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा के एक ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी कर्मयोगी अनमोल रत्न आदर्श शिक्षक आदरणीय श्री कृष्ण मुरारी उपाध्याय जी जनपद–ललितपुर से परिचय करा रहे हैं। जिन्हें हम यदि नवाचार का जनक और हम शिक्षकों के मार्गदर्शक कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगा, क्योंकि आपने शिक्षक के रूप में शिक्षण और शोध दोनों को सिद्ध कर दिखाया। आपके सकारात्मक प्रयासों ने यह साबित कर दिया है कि यदि शिक्षक चाहे तो बेसिक शिक्षा की वर्तमान परिस्थितियों में भी कोई असम्भव शब्द नहीं है। वह शून्य को भी शिखर में बदल सकता है। मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से ऐसे आदरणीय और अनुकरणीय अनमोल रत्न को हार्दिक नमन करते हैं।

आप सभी को मेरा नमस्कार
मैं कृष्ण मुरारी उपाध्याय सहायक अध्यापक, UPS Patha, (अगस्त 2004 से मई–2011 एवं नवम्बर 2014 से अप्रैल 2018)

यात्रा का दूसरा चरण – उच्च प्राथमिक विद्यालय पठा, ब्लाक –महरौनी, जनपद – ललितपुर।

इस विद्यालय में मेरी पोस्टिंग अगस्त 2004 में हुई थी। उस समय यह विद्यालय बहुत जर्जर स्थिति में था पास में ही एक भवन खंडहरनुमा खड़ा था। शौचालय में ताले पड़े रहते थे और अध्यापकों, बच्चों को उस खंडहर में अलग–अलग कक्ष निर्धारित थे जहां वह लघुशंका के लिए जा सकते थे। विद्यालय में शिक्षकों के लिए फर्नीचर के नाम पर एक या दो कुर्सी थीं। पानी पीने के लिए एक लोटा था। मेन गेट टूटा हुआ था जिसमें से आसपास के लोग विद्यालय के प्रांगण में आते थे और हैंडपंप के पानी का भरपूर रात–दिन उपयोग करते थे। फसल काटने के मौसम में मजदूर जिन्हें यहां चौतुआ कहा जाता है। यहाँ आ करके दो–दो महीने तक रहते थे। विद्यालय में 1 वर्ष का समय बड़ा संघर्ष भरा था प्रभारी प्रधानाध्यापक इस बात को समझने को तैयार नहीं थे

कि विद्यालय की हालत को बदलना चाहिए। एक वर्ष और निकल गया और 2006 की शुरुआत में ही विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रुप में श्री कलीम खान साहब का आगमन हुआ जो प्रभारी प्रधानाध्यापक थे उनका कहीं और स्कूल में प्रमोशन हो गया वह यहां से चले गए थे। माननीय कलीम खान साहब का जब आगमन नहीं हुआ था, इस दरमियान विद्यालय में लगभग 1 माह से अधिक अकेला रह गया था उस दौरान गांव के युवाओं ने विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था के संचालन के लिए अपना महत्वपूर्ण समय दिया था। मैं उन युवाओं का शुक्रगुजार हूँ और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

इसके पहले मैं प्राथमिक विद्यालय ककरूवा ब्लाक – मडावरा (ललितपुर) में कार्यरत था। जहाँ छात्रांकन 325 था। जानकारी मिलती है कि अब वहाँ 100 बच्चे भी नहीं हैं, ग्रामवासी और बच्चे जो अब युवा हैं याद करते हैं।

2006 में प्रधानाध्यापक के आगमन के साथ ही यह तय किया गया कि विद्यालय को सपनों के विद्यालय के रूप में बनाने के लिए प्रयास करने ही होंगे। प्रांगण में एक पौधा लगाना मुश्किल था, चहारदीवारी टूटी हुई थी और धीरे–धीरे ठीक किया गया। विद्यालय में धीरे–धीरे कायाकल्प होने लगा। शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने विद्यालय का अवलोकन किया था और प्रशंसा की और पर्याप्त सहयोग दिया।

इसी दरमियान विद्यालय में बच्चों को बैठने के लिए फर्नीचर की व्यवस्था हुई, कंप्यूटर शिक्षण प्रारंभ हुआ, नये कक्ष बने, नया शौचालय बना, विद्युतीकरण हुआ, रसोईघर बना, रनिंग वाटर सप्लाई के लिए समवर्सीवल पम्प लगा, स्काउट बैण्ड तैयार किया गया, बहुप्रतीक्षित बाल संसद भवन – 2012 में बना, विद्यालय में स्मार्ट क्लास के लिए ललितपुर जनपद के एक छोटे से गांव से निकलकर अमेरिका के टेक्सास में रहने वाले श्री संजीव सिरोठिया जी ने वर्ष 2009 में विद्यालय के लिए एक प्रोजेक्टर और एक लैपटॉप उपलब्ध कराया। बच्चों के लिए यह अनुभव नया था। शिक्षकों के लिए भी यह बड़ी बात थी। वर्ष 2010 में अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक भ्रमण दल ने विद्यालय का अवलोकन किया और सराहना की। संसाधनों की बात क्या करें, अब हालात यह है कि इनका रखरखाव कर पाना मुश्किल लगने लगा है। हम लोगों ने जहाँ विद्यालय के संसाधनों के विकास पर ध्यान दिया वहीं शिक्षा की व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए भी काम किया। 2009 में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के साथ साथ राष्ट्रीय आय एवं योग्यता परीक्षा का संचालन शुरू हो गया था पहले ही वर्ष विद्यालय से एक छात्र ने इस में सफलता पाई थी और तब से लेकर आज तक इस वर्ष तक विद्यालय की सफलता का प्रतिशत बढ़ता ही रहा है 2011, 12, 13, 14 , 15 , 16 , 17 , 18 लगातार इन वर्षों में पूरे जनपद से जहां 10 बच्चों ने सफलताएं पाई हैं वहां उच्च प्राथमिक विद्यालय पठा के 7 और 8 बच्चे सफल होते रहे हैं।

विभिन्न विज्ञान या अन्य शैक्षिक मेले हों, चाहे अन्य प्रतियोगिताएं हों, बच्चों ने ना केवल प्रतिभाग किया बल्कि अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ लोगों को अपने बारे में विचार करने पर मजबूर कर दिया। जहाँ हम लोग शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे थे वहीं विद्यालय के बच्चों ने खेल के मैदान और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जनपद और मंडल स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपनी छाप छोड़ी और जीत हासिल की विद्यालय को बेहतर बनाने में विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री कलीम खान साहब जिनकी इमानदारी सहजता समर्पण और टीम भावना के कारण सभी शिक्षकों ने जिनमें श्री संजीव जैन, श्री मुकेश नायक, श्री प्राणेश भूषण मिश्रा, श्रीमती महिमा जैन, श्रीमती प्रीति, श्री रामलाल जी, श्री बृजेश जी का बहुमूल्य योगदान रहा है, इन सभी की तारीफ करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं, सभी ने विद्यालय को बेहतर बनाने और बच्चों को बेहतर करने के लिए रात और दिन एक कर दिए, सभी को अपने जीवन के लिए ढेरों शुभकामनाएं। विद्यालय को ग्राम वासियों ने ग्राम के प्रधान और सदस्यों ने तथा समाजसेवियों ने आवश्यकतानुसार और समय–समय पर अपना पूरा सहयोग दिया। शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने ना केवल उत्साहवर्धन बल्कि विद्यालय को सपनों का विद्यालय बनाने के लिए पूरा सहयोग और समर्थन किया। विद्यालय परिवार शिक्षा विभाग के उन सभी अधिकारियों का हृदय से शुक्रगुजार है।

अब यात्रा का तीसरा चरण शुरू हुआ, 2011 में ए बी आर सी के रूप में चयन होने पर जहाँ पूरे ब्लाक के विद्यालयों के भ्रमण का अवसर मिला, अनेकों प्रशिक्षण , सभी स्तर पर लिए और दिए। लेकिन सभी स्कूलों के बच्चों के लिए कुछ विशेष न कर पाने का मलाल था अतः एबीआरसी (2011–2014) के पद से त्यागपत्र देकर के अपने विद्यालय को पुनः ज्वाइन किया और लंबे समय से चल रहे मन के विचारों के आधार पर Knowledge Bank & Passbook (जो बाद में प्रोजेक्ट लीप) को 2014 में अपने स्कूल में पहले

चरण में लागू किया। आज यह प्रोजेक्ट प्रदेश के आठ जनपद के सौ स्कूलों में इस सत्र में लागू होने जा रहा है। उच्च प्राथमिक विद्यालय पठा इस प्रोजेक्ट की प्रयोगशाला, उद्भव स्थल और सजग गवाह बना है। यह विद्यालय दिनो दिन उन्नति करें यह मेरी कामना है।

अब यात्रा का चौथा चरण शुरू हुआ, पिछले दिनों गांव का एक प्राथमिक विद्यालय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के लिए चयनित किया गया। गांव में आवागमन के रास्ते ठीक ना होने एवं पर्याप्त स्टाफ ना मिलने की संभावना के चलते अंग्रेजी विद्यालय के लिए चयनित शिक्षकों ने यहां आना स्वीकार नहीं किया तब मैंने एक प्रार्थना पत्र देकर माननीय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी से निवेदन किया कि मेरी पदस्थापना इस विद्यालय के संचालन के लिए प्रधानाध्यापक के जिम्मेदारी के साथ आदेशित करने की कृपा करें।माननीय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय ने मेरा अनुरोध स्वीकार किया। तब मैंने 26 अप्रैल 2018 को अंग्रेजी माध्यम प्राथमिक विद्यालय पठा का चार्ज ग्रहण कर लिया है। अब मैं हूँ, Principal EMPS Patha, इसके बारे में फिर कभी . .... । लेकिन इतना अभी बता दें कि दस दिन में लक्ष्य से अधिक प्रवेश हो गए , 110 के मुकाबले कुल 120, पिछले साल 100 बच्चे थे, नये प्रवेश 34, अगले साल के लिए अभिभावकों ने अपने बच्चों के प्रवेश के लिए अभी से नामांकन करा दिया है।

शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए आप सभी के प्रयासों की कड़ी में उच्च प्राथमिक विद्यालय के पठा के शिक्षकों के योगदान को शामिल करने के लिए अनुरोध है।

आपका बहुत–बहुत धन्यवाद

कृष्ण मुरारी उपाध्याय

अनमोल रत्न–2

पूनम नामदेव
Primary School Jaroda Jutt no 2
(Modal English Medium)
विकास क्षेत्र–देवबंद सहारनपुर

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न शिक्षिका बहन पूनम नामदेव जी जनपद– सहारनपुर से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच, बच्चों के प्रति वात्सल्य भाव के साथ अपने कर्तव्यों की कुशल नेतृत्व क्षमता से विद्यालय को सामाजिक विश्वास का प्रतीक बनाकर, हम सब को प्रेरक मार्गदर्शन दिया।

जहाँ बहन जी ने ऐसे अनेकों आलोचकों को अचंभित कर दिया है जो अपने को शिक्षक की जगह मात्र वेतनभोगी रहना पसन्द करते हैं। जिनके लिए बेसिक शिक्षा और बच्चे मात्र वेतन के स्रोत हैं। जो कहते है कि किसी विद्यालय को केवल अपने वेतन से ही बनाया जा सकता है। जबकि बहन जी ने अपनी व्यवहार कुशलता से जनसहयोग और जन सहभागिता के द्वारा विद्यालय के विकास में चार चाँद लगाते हुए अभिभावकों के लिए विश्वास का प्रतीक बना दिया है। जो हम जैसे हजारों शिक्षक साथियों के लिए प्रेरक और अनुकरणीय है। मिशन शिक्षण संवाद परिवार, शिक्षक पद की मर्यादा और मानवता को मजबूत करने वाली बहन पूनम नामदेव जी को बार–बार नमन करता है।

आइये जानते हैं बहन जी द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को:–

मैं पूनम नामदेव प्रधानाध्यापिका Primary School Jaroda Jutt no 2 (Modal English Medium) विकास क्षेत्र–देवबंद जनपद–सहारनपुर में दिनांक 02–04–18 से कार्यरत हूँ।

बेसिक शिक्षा विभाग में मेरी प्रथम नियुक्ति दिनांक 06–07–2009 है। मेरे मुख्य विषय विज्ञान व अंग्रेजी है। मेरी रुचियां क्रमशः गायन, नृत्य और बैडमिंटन खेलना है। मैं स्काउट गाइड में ब्लॉक देवबंद से guide captain हूँ। इसके अतिरिक्त निरक्षरों को साक्षर बनाना एवं महिला सशक्तिकरण में सहयोग करना मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैंने अपने पुराने विद्यालयों में कई रसोई माताओं और S.M.C. महिला सदस्यों को साक्षर बनाया है। वर्तमान विद्यालय में मैंने निम्न कार्य किये है–

1–सर्वप्रथम मैंने विद्यालय के भौतिक परिवेश में परिवर्तन कराया जिसमें रंगाई–पुताई अलग तरह से कराई व कक्षा–कक्षों को सुंदर व आकर्षक बनाने के लिए उनका भी रंग change कराया। साथ ही विद्यालय को समस्त सुविधाओं एवं शैक्षिक सामग्री से परिपूर्ण किया।

2– मेरे विद्यालय में नियमित प्रार्थना सभा होती है जिसमें हिन्दी अंग्रेजी दोनों प्रार्थनाएं, प्रेरणा गीत, GK, self introduction,rhymes, कविताएं आदि कराई जाती है।

3–मेरे द्वारा भट्टे आदि के काम पर गए, विद्यालय में अनुपस्थित रहने वाले छात्र–छात्राओं को विद्यालय में वापस लाने एवं उनके ठहराव हेतु सदैव प्रयास किया जाता है जिस कारण ऐसे बच्चे अब स्कूल आने लगे हैं।

4–मेरे विद्यालय में 19–5–2018 तक वर्तमान छात्र संख्या–153 है। जिनमें 58 नवीन नामांकन है।

5–मैंने विद्यालय में 4 year की प्ले क्लास भी बनाई है जिसमें 18 बच्चे नामांकित है।

6–play क्लास को private पब्लिकेशन का सम्पूर्ण कोर्स विद्यालय द्वारा दिया जाता है।

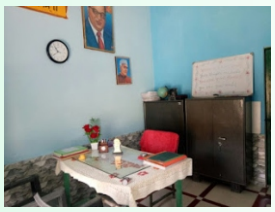

7–प्रत्येक शनिवार Activity डे मनाया जाता है जिसमें बच्चों को academic से अलग एजुकेशनल एक्टिविटीज आदि कराई जाती है।

8–मेरे विद्यालय में निर्धन छात्र छात्राओं को अपनी तरफ से stationary, note books उपलब्ध कराई जाती है।

9–मैंने ग्राम प्रधान जी की सहायता ली, स्कूल बिल्डिंग का कायाकल्प कराया और स्कूल गेट बनवाया।

10– मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि मेरे द्वारा विधायक श्री कुंवर बृजेश कुमार जी से और अन्य गणमान्य ग्रामवासियों से संपर्क किया गया और उनसे विद्यालय हेतु furniture उपलब्ध कराने का आग्रह किया गया जिसके फलस्वरूप आज मेरे विद्यालय में समस्त कक्षाओं हेतु सुंदर व मजबूत फर्नीचर उपलब्ध है जिसके कारण मेरा विद्यालय ब्लॉक का सबसे सुंदर विद्यालय बना है।

11–मेरे विद्यालय को दिनांक 14–5–2018 में खंड शिक्षाधिकारी महोदय द्वारा सर्वश्रेष्ठ विद्यालय पुरस्कार दिया गया है।

12–भविष्य में मेरी योजना अपने विद्यालय में spoken english class, origami class, karate class, dance class, singing class, caligraphy class आदि कराने की है जिससे बच्चों में छुपी प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें निखारा जा सके।

धन्यवाद– पूनम नामदेव,सहारनपुर

अनमोल रत्न–3

रोजी अरोड़ा

पूर्व माध्यमिक विद्यालय

कुम्हरिया, ब्लॉक–सैदनगर,

जिला–रामपुर

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न शिक्षिका बहन रोजी अरोड़ा जी से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच से और शिक्षण कला में वैदिक तथा व्यवहार विधि को अपनाते हुए, गणित और संस्कृत शिक्षण को न केवल सरल और प्रभावी बनाया बल्कि हम सब के लिए प्रेरक और आकर्षक भी बनाया।

आइये देखते है आपके द्वारा उपयोग और खोजी गयी नवीन शिक्षण विधियों कोः–

मेरा नाम रोजी अरोड़ा है। मैंने अपनी सेवा पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुम्हरिया ब्लॉक–सैदनगर, जिला–रामपुर में सन् 2015 से विज्ञान अध्यापिका के रुप में देना प्रारंभ किया। मेरे द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गए प्रयास निम्न है.....

1– गणित जैसे कठिन विषय को सरल व रूचिकर बनाने के लिए जादू के गणित वैदिक गणित को सिखाया गया हैं।

2– सुबोल नवाचार संस्कृत शिक्षण के लिए सरल एवं सुगम तरीका।

3– विद्यालय में विज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना।

4– सुकरात प्रश्नोत्तरी विधि पर आधारित सामाजिक, पर्यावरण विज्ञान कक्षा 6, 7, 8 के लिए अधिगम को सरल करने के लिए लिखी गयी।

5– प्रोजेक्टर व computer का प्रयोग करके मीना मंच वीडियो, प्रेरणात्मक मूवी दिखाई जाती हैं।

6– विज्ञान प्रदर्शनी में बच्चों द्वारा सर्वाधिक वर्किंग मॉडल्स की प्रस्तुति।

7– सुपर मॉम प्रोग्राम का आयोजन जिससे अभिभावकों की रुचि विद्यालय के कार्यक्रम में बच्चों की और जागृत हुई हैं।

8– प्रतिदिन पुरस्कार योजना से बच्चों के अधिगम स्तर में वृद्धि।

9– संस्कृत भाषा में बच्चों द्वारा नाटिका का मंचन करना।

10– खेलों में छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन।

11– स्मार्ट क्लास द्वारा शिक्षण।

12– भविष्य की योजना में बच्चों को अधिक से अधिक प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करना।

अनमोल रत्न–4

विशाखा चौहान UPS सढौली हरिया, रामपुर मनिहारान, सहारनपुर

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न शिक्षिका बहन विशाखा चौहान जी से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच और व्यवहार कुशलता से समाज के बीच विश्वास बनाते हुए बच्चों को ऐसे तराशा है कि वह विभिन्न शिक्षण गतिविधियों में सम्मान और स्थान पाकर, अपने विद्यालय और बेसिक शिक्षा को गर्व और गौरव की अनुभूति कराते हैं।

आइये देखते हैं आपके द्वारा किए गये कुछ प्रेरक प्रयासों कोः–

मैं विशाखा चौहान सहायक अध्यापक पूर्व माध्यमिक विद्यालय सढौली हरिया, विकास क्षेत्र– रामपुर मनिहारान, जनपद–सहारनपुर में 16 अक्टूबर 2008 से कार्यरत हूँ। बेसिक शिक्षा विभाग में प्रथम नियुक्ति 31 मार्च 1999 है। मेरा विषय विज्ञान व अंग्रेजी है जिसे मैं बच्चों को पूर्ण लगन और मेहनत से पढ़ाती हूँ। विज्ञान प्रदर्शनी में मेरे विद्यालय के छात्रों का चयन राज्य स्तर पर कई बार हुआ है। विज्ञान व अंग्रेजी से अलग मेरी रुचि कला, क्राफ्ट, सामान्य ज्ञान व खेल में है। माननीय जिलाधिकारी ने 30 दिसंबर 2017 को एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन कराया, जिसमें मेरे विद्यालय के बच्चों ने प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिसमें जिलाधिकारी ने बच्चों को 2100 व 1100 की नगद धनराशि दी। मेरे विद्यालय के बच्चे खेल में ब्लॉक स्तर, जिला स्तर, मंडल स्तर और राज्य स्तर पर खेलने जाते हैं। खेल में प्रथम और द्वितीय पुरस्कार पाते हैं। मैं निर्धन परिवार के बच्चों की आवश्यकता अनुसार आर्थिक सहायता करती हूँ और गरीब छात्रों को स्टेशनरी भी दिलवाती हूँ। मेरे इस परिश्रम को देखते हुए माननीय मुख्यमंत्री जी श्री योगी आदित्यनाथ जी ने 5 सितंबर 2017 को मुझे राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया।

बहुत–बहुत धन्यवाद

मिशन शिक्षण संवाद की ओर से विद्यालय परिवार के सभी सहयोगियों को उज्जवल भविष्य की कामनाओं के साथ हार्दिक शुभकामनाएं!

अनमोल रत्न–5

मोनिका सिंह UPS मलवां, मलवां, फतेहपुर

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न शिक्षिका बहन मोनिका सिंह जी से करा रहे हैं। जिनका बच्चों के प्रति वात्सल्य मय समर्पित व्यवहार और अपने कर्तव्यों के प्रति सकारात्मक सोच से अपने विद्यालय और बच्चों को एक सम्मानित स्थान तक पहुँचाकर समाज के बीच विश्वास स्थापित करने में कामयाबी प्राप्त की है। जो हम सब के लिए प्रेरक और अनुकरणीय है।

आइये देखते हैं आपके द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों कोः–

मैं मोनिका सिंह उ.प्रा.विद्यालय मलवां प्रथम, शिक्षा क्षेत्र–मलवां फतेहपुर में स.अ.(विज्ञान) हूं। मेरी प्रथम नियुक्ति 2005 की है। इस विद्यालय में 2011 से कार्यरत हूं।

मैं जब इस विद्यालय में आई थी तो विद्यालय के बच्चों की शैक्षिक स्थिति बहुत ही कमजोर थी। नामांकन संख्या 150 के आसपास रही है जो कि आज भी लगभग वही है। विद्यालय में 4 स.अ. और प्र.अ. जी तो थे परन्तु गणित एवं विज्ञान शिक्षण सही नहीं हो पा रहा था।

मेरे विचार से, मेरा उद्देश्य यह है कि चाहे संसाधन कम हो परंतु बच्चा जब विद्यालय से घर वापस जाये तो कुछ न कुछ नया सीख कर जाय। बच्चों को विद्यालय घर की तरह ही लगे। मेरे विचार में यह भी रहता है कि मैं बच्चों से ज्यादा से ज्यादा बात करुंगी तो बच्चे ज्यादा खुलकर सामने आयेंगे।

मैंने बच्चों को खेल–खेल में विज्ञान पढ़ाना शुरू किया। गणित के सवालों को छोटा करके समझाया। छोटे–छोटे सवालों को लगाकर दिखाने पर पुरस्कृत किया। बच्चों में आत्मविश्वास जगाया और यह कार्य आज भी कक्षा–6 में करना पड़ता है।

बच्चों की विभिन्न रुचियों को देखकर, जानकर विभिन्न गतिविधियों में शामिल होने के लिए उत्साहित करती हूं।

मैं मोनिका सिंह स.अ. हूं। अतः मेरे पास कोई वित्तीय लेनदेन नहीं है परंतु (प्र.अ.) से सहयोग हमेशा मिला। मैंने सबसे पहले बच्चों के टूटे फर्नीचर की मरम्मत करवाई।

बच्चों को विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए उत्साहित किया।

आज मेरे प्रयासों के कारण विद्यालय में विज्ञान प्रयोगशाला है। बच्चों को विज्ञान के प्रयोग करके समझाया जाता है तो पढ़ाना सरल हो जाता है। मैं मीना मंच की जिला स्तरीय संदर्भदाता भी हूं। मेरे विद्यालय में सक्रिय मीना मंच है। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित किया है। जीवन कौशल के विभिन्न पहलुओं पर कार्य कर रही हूं और बालिकाओं को जीवन की विभिन्न चुनौतियों को समझने व डटकर सामना करना है की, शिक्षा देती हूं।

बच्चों को शैक्षिक भ्रमण के लिए कानपुर चिड़ियाघर ले गई थी।

I am friendly with my students

मैं बच्चों को ''करके सीखने'' की क्षमता विकसित करती हूं। खेल–खेल में शिक्षा, रोचक विषय बनाकर कठिन विषय को समझने की क्षमता विकसित करने की कोशिश करती हूं। मेरे बच्चे मेरी कोशिश को कामयाब भी हर क्षेत्र में करके मुझे गौरवान्वित महसूस कराते हैं। खेल कूद प्रतियोगिता में जिले में कामयाबी हासिल की, विज्ञान मेले में विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर कामयाब होना, स्काउट में मंडल स्तर तक पहुंचना अच्छा लगता है। मुझे यही सब करके बच्चों में आत्मविश्वास भरना अपनी खुद की कामयाबी लगती है।

मोनिका सिंह (स.अ.)

निन्दक नियरे राखिए

'योजना' एक ऐसा शब्द जिसकी ध्वनि मात्र से यह अहसास होता है कि प्रस्तुत कार्य एक पूर्व नियोजित ,सुव्यवस्थित विधि एवं विधान से सम्पन्न किया जाना तय है। इतिहास गवाह है कि योजनाबद्ध तरीके से किये गए कार्य से दुर्गम पर्वत श्रृंखलाओं पर विजय पताका फहराई गयी है तो गहरे से गहरे समुद्र की थाह भी हम मानवों ने ली है। चाँद पर कदम रखना भी कोई एक दिन का अकस्मात कार्य नही , बल्कि योजनाबद्ध तरीके से निष्पादित करने से ही सम्भव हो सका होगा। योजनाएं सिर्फ बड़े कामों या उपलब्धियों के लिए जरूरी हों, ऐसा भी जरूरी नही है। व्यक्तिगत जीवन मे भी प्रतिदिन हमे अव्यवस्थित एवं योजना से न चलने पर परेशानी के सैकड़ो उदाहरण देखने मिलते हैं। किसी मीटिंग या कार्यालय को कूच करने से पूर्व पहले से यदि कपड़े इस्त्री नही हैं, स्टेशनरी यथास्थान नही है तो विलम्ब अवश्यम्भावी है।

शिक्षक के जीवन मे जो महत्व कलम का है, उससे कम महत्व ''पाठ योजना'' का भी नही कहा जा सकता है। योद्धा कितना भी कुशल क्यों न हो, उसका मस्तक कितने भी रणविजय तिलक से सुशोभित हो, किन्तु उसे हर नए रण से पूर्व अपने शस्त्रादि की परख होनी जरूरी है। पाठ योजना भी शिक्षक को विषय वस्तु के पुनरावलोकन, उसके दोहराव , पुर्नविचार का अवसर होता है। कुछ शिक्षक तर्क देते हैं कि हम तो वर्षो से यही पाठ बच्चों को पढा रहे हैं, विषयवस्तु भी पुरानी ही है,हमको यह एकदम कंठस्थ है, हम अपनी वर्षो पुरानी योजना से ही पढ़ाएंगे, उसमे परिवर्तन की क्या आवश्यकता है? प्रत्येक बालक अन्य से भिन्न होता है , तो उनके मानसिक स्तर व समझ के अनुकूल अपनी पाठ योजना के परिवर्तन की भी प्रमुख आवश्यकता होती है। उस वर्ष की कक्षा के छात्रों के सम्मुख प्रस्तुतिकरण से पूर्व यदि उनकी प्राप्त दक्षताओं के अनुरूप शिक्षक अपनी पाठ योजना को संशोधित कर लेता है तो वह अपने विषय की ग्राह्यता को और भी विकसित कर रहा होता है। अधिकाधिक बच्चे विषय को ग्रहण करें, यही उसकी मुख्य उपलब्धि है।

किन्तु विचारणीय बिंदु यह है कि क्या शिक्षक से उत्तम कोटि की पाठ योजना बनवा लेने मात्र से ही बेसिक शिक्षा का उत्थान हो जाएगा!!! शिक्षण की सफलता मात्र पाठ योजनाओं पर नही, उनके क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। अभी भी बेसिक में प्राथमिक में 5कक्षाएं तो हैं, किन्तु प्रत्येक कक्षा के लिए एक शिक्षक आज भी दूर की कौड़ी है। उच्च प्राथमिक में भले ही 3अध्यापक हों, किन्तु वहाँ भी , कार्यालयीय कार्य के बोझ से दबा प्रधानाध्यापक शायद ही शिक्षण कार्य हेतु कभी वक्त निकाल पाता हो। ऐसे में पाठ योजनाओं को लागू करने का कितना अवसर उपलब्ध होगा, सहज कल्पनीय है। योजनाएं कितनी भी अच्छी हों, पर जब तक उनको लागू करने को सही व अनुकूल परिस्थितियां नही होंगी, सब व्यर्थ होगा।।

—महेन्द्र सिंह यादव

राज्य-राजधानी एक्सप्रेस

शिक्षण सहायक सामग्री (TLM)

राज्य राजधानी एक्सप्रेस

उपर्युक्त नाम से ही स्पष्ट है कि ये एक्सप्रेस राज्यों की राजधानियों से होकर जाती होगी।

जी हां ये एक्सप्रेस भारत के 29 राज्यों एवं उनकी राजधानियों से होकर जाती है जिसमें सवार होकर कक्षा 4 के बच्चे अपने भारत देश के सभी राज्यों के बारे मे जानकारी प्राप्त करते हुए उनकी राजधानियों को याद कर सकेंगे।

TLM विवरण

इस ट्रेन को बनाने हेतु आवश्यक सामग्री – विभिन्न रंग के चार्ट , फेविकोल,कैंची एवं स्केच पेन।।।

बनाने की विधि–

भारत के सभी 29 राज्यों को समाहित करने के लिए एक इंजन,14 बोगी एवं एक गॉर्ड बोगी के रूप में चार्ट पेपर से एक ही आकार के कुल 16 टुकड़े कैंची की सहायता से काटकर उनको फेविकोल की सहायता से जोड़ लेंगे।।

पहले खण्ड में पेंसिल या स्केच की सहायता से ट्रेन के इंजन का आकार दे देंगे एवं बाद के सभी 15 चार्ट पेपर की बोगियों में नीचे पटरियां एवं पहिये बनाकर प्रत्येक बोगी में दो दो राज्य की राजधानियां क्रमशः लिखते जाएंगे।

राजधानियों के लिखने के बाद उनके ऊपर दूसरे रंग के चार्ट पेपर को काट कर उस पर उसी राजधानी के राज्य के नाम लिखकर चिपकाते जायेंगे।

इस प्रकार तैयार राज्य राजधानी एक्सप्रेस बच्चों को लेकर सफर करने के लिए तैयार है।

गतिविधि –

कक्षा के सभी बच्चों में से 16 बच्चों की सहायता से ये गतिविधि आसानी से करायी जा सकती है।

शुरुआत के दिनों में जिस बच्चे के सामने जो बोगी होगी उस बोगी में लिखे राज्य एवं राजधानी को याद करना होगा।।

बाद में बच्चों को प्लेटफॉर्म के रूप मे खड़ाकर जब उनके सामने ये एक्सप्रेस आएगी तो उस बच्चे को अपने सामने आये बोगी में लिखे राज्य की राजधानी बतानी पड़ेगी।

अध्यापक इसके लिए जो भी पुरस्कार रखना चाहे प्रोत्साहन हेतु रख सकते हैं।

साभार
डॉ0 ऊषा सिंह (स0अ0
प्रा वि भरथरा,
काशी विद्यापीठ,
वाराणसी

इंगलिश मीडियम डायरी

अंग्रेजी शिक्षण की समस्याएं एवं समाधान

प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी भाषा के शिक्षण में आने वाली समस्याओं को हल करने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जाने चाहिए –

1 बच्चों की रूचि को बरकरार रखने के लिए कक्षाओं को जीवंत और रोचक गतिविधियों से भरा रखने के लिए शिक्षकों को सक्रिय और उत्साही होने की आवश्यकता है। उन्हें बच्चों को कक्षा शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

2 कक्षा में बच्चों के लिए एक इनपुट और प्रिंट समृद्ध वातावरण अंग्रेजी सीखने को सुखद बनाने के लिए बनाया जाना चाहिए। तैयार किए जाने वाले टीएलएम वास्तविक शिक्षण स्थितियों से संबंधित होना चाहिए , न कि अलग सामग्री के रूप में।

3 बच्चों के बीच पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए कक्षा पुस्तकालय या सीखने के कोनों को विकसित किया जाना चाहिए।

4 साहित्यिक रचनाओं को पढ़ने के लिए शिक्षकों को अपने कौशल, ज्ञान और समझ को विकसित करने की आवश्यकता है। उन्हें अंग्रेजी के शिक्षण के लिए साहित्य आधारित दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

5 शिक्षकों को पेशेवर विकास के लिए अंग्रेजी में किताबें, लेख और समाचार पत्र भी पढ़ने की जरूरत है। उन्हें खुद को पुस्तकालयों, अंग्रेजी समूहों या शिक्षण संघों के सदस्य के रूप में नामांकित करना चाहिए।

6 शिक्षकों को शुरुआत में ही पूरे पाठ का पूर्व अध्ययन कर लेना चाहिए और पुनरावृत्ति के लिए अभ्यास कार्य एवं गतिविधियों का उपयोग करना चाहिए।

7 पाठ्यपुस्तकों के उपयोग में शिक्षकों को और अधिक रचनात्मक होने की आवश्यकता है, क्योंकि पाठ्यपुस्तक सबकुछ नहीं दे सकते हैं। पाठ्यपुस्तकों से परे सामग्री का उपयोग करके मौखिक और लिखित अभ्यास के बहुत सारे प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। सहायक या सन्दर्भ पुस्तकों का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

8 नए शब्दों से परिचितता प्रदान करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता है। शब्द कार्ड का उपयोग, बिंगो जैसे गेम्स और बड़ी किताब, छोटी पुस्तक और साझा पढ़ने का उपयोग अधिक से अधिक करना चाहिए। चार्ट,दृष्टि शब्दों, क्रिया शब्दों में दिए गए शब्दों का उपयोग, वाक्य बनाना, शब्द बनाना जो समान रूप से शुरू या समाप्त होता है उसे शिक्षण में प्रयोग किया जाना चाहिए। कक्षाओं में नियमित रूप से सस्वर वाचन और मौन वाचन का अभ्यास किया जाना चाहिए।

9 नियमित रूप से कक्षा में प्रत्यक्ष निर्देश और अभ्यास के लिए अवधि प्रदान की जानी चाहिए। बाएं से दाएं दिशा, मूल स्ट्रोक, समझ, बुनियादी शब्दावली (सीधी रेखा, सर्कल इत्यादि) से लिखने, चित्रों, अक्षरों के गठन, अक्षरों और दृष्टि शब्दों को पहचानने और मांसपेशियों पर नियंत्रण से हस्तलेखन में सुधार होगा।

10 उचित भावनाओं के साथ प्रशंसा और आनंद के लिए कविता को पढ़ाया जाना चाहिए। कविता पढ़ने के दौरान, उचित लय, संगीत और ध्वनि के साथ पाठ किया जाना चाहिए।

11 पाठ्य पुस्तक सामग्री के शिक्षण के दौरान व्याकरणिक बिंदुओं को संदर्भित करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

12 बच्चों के बीच सीखने की कमी की पहचान करने के लिए गृहकार्य का उपयोग किया जाना चाहिए और शिक्षकों को इन्हें संबोधित करने के प्रयास करना चाहिए।

13 छात्रों को विभिन्न प्रकार के प्रश्न (व्यक्तिगत, समझ, व्याकरण और सामान्य प्रश्न) के साथ–साथ जवाब देने में अभ्यास करने की आवश्यकता है।

विनोद कुमार
प्र.अ.
पीएस चककलूटी
ज्ञानपुर भदोही

शिक्षण गतिविधि

छोटे बच्चों में प्रचलित एक खेल जिसे बच्चे बड़ी रुचि से खेलते हैं, इस खेल में एक बड़ा सा आयात बनाकर उसमें बराबर के कई छोटे–छोटे वर्ग खाने बना लेते हैं और वर्ग खाने में बच्चे पत्थर का टुकड़ा फेंकते हैं ।

इस खेल को देखकर एक नवाचार मष्तिष्क पर आया जिसे मैंने अपने विद्यालय में प्रयोग भी किया।

नवाचार कुछ इस तरह है कि कक्षाकक्ष या मैदान में उपरोक्त की भाँति ही एक आयत खींचकर उसमें बराबर के छोटे–छोटे वर्ग खाने खींच लें। इन वर्ग खानों में कुछ शब्द या अन्य जिस पर हमको गतिविधि करानी हों, के नाम लिख दें। अब कक्षा के छात्र–छात्राओं को इस खेल में सम्मिलित करते हुए उन्हें किसी भी एक खाने पर पत्थर डालने को बोलें जिस पर पत्थर गिरेगा उस शब्द के बारे में छात्र–छात्रा उत्तर देंगे।

उत्तर प्राप्त होने के बाद उस खाने को काट देंगे, इस प्रकार सभी खानों के प्रश्न का मौका आएगा। यदि छात्र–छात्रा उसका उत्तर न दे सका तो वो आउट हो जाएगा और फिर दूसरे छात्र को पत्थर फेंकने का मौका दिया जाएगा। इस प्रकार सारे खाने कटने के बाद जो छात्र–छात्राएं आखिर तक बचेंगे वो विजेता होंगे।

इस खेल का प्रयोग हिंदी,संस्कृत या अंग्रेजी मीनिंग, विलोम, पर्यायवाची, विटामिन, पोषक तत्व, अन्य सामान्य विषयों व सामान्य ज्ञान में शून्य नवाचार के रूप में इस गतिविधि का प्रयोग किया जा सकता है।

श्वेता सिंह (स०अ०)

प्राथमिक विद्यालय हरिहर नगर,

बेरुआबारी जनपद :– बलिया

नवाचार

स्वलेखन कार्य

मैं करूणा मौर्य, सन् 2012 से प्रा0वि0 टिकरी, विकास खण्ड–काशी विद्यापीठ, वाराणसी में कार्यरत हूँ। मुझे ज्ञात है कि बच्चों के सतत् अधिगम उपलब्धि में कक्षा में उनकी उपस्थिति नियमित न होना ही सबसे बड़ी बाधा है। इसे दूर करने के लिए मैंने उनके अभिभावकों से सम्पर्क कर बच्चों के प्रति शैक्षिक जागरूकता बढ़ायी। अच्छे कार्य करने वाले बच्चों को समय–समय पर पुरस्कृत करते रहने के साथ मैंने बच्चों की प्रगति के लिए उनके अभिभावकों को "अभिभावकों प्रोत्साहन प्रपत्र" देकर 26 जनवरी 2017 एवं 2018 को सम्मानित किया। "अभिभावकों प्रोत्साहन प्रपत्र" नामक नवाचार में बच्चों की विशेष अच्छाइयॉं, सुधार के बिन्दुओं सहित उनके अभिभावकों से अपेक्षित सहयोग का आग्रह किया गया था। परिणामस्वरूप बच्चों का मनोबल व अभिभावकों का आत्मसम्मान बढ़ाने से विद्यालय में सामुदायिक सहयोग एवं सहभागिता बढ़ी जिसके प्रभाव से बच्चों की उपस्थिति में नियमितता व नामांकन दर में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। अप्रैल 2017 में नामांकित बच्चों की संख्या 118 थी जो जनवरी 2018 में बढ़कर 297 हो गयी। प्रतिदिन विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति भी करीब 50 से 80% रहती है।

बच्चे पढ़ना–लिखना सीख गये व अपने विषयवस्तु को कंठस्थ भी किये किन्तु उनके घर में शैक्षणिक वातावरण न होने से प्रायः वे भूल भी जाते थे। बच्चों के आंतरिक विकास न हो पाने की इस अत्यन्त गम्भीर समस्या से जूझते हुए मैंने उनकी समझशक्ति एवं अभिव्यक्ति क्षमता का गुणात्मक उन्नयन करने के उद्देश्य से बच्चों के बीच "स्वलेखन कार्य" करना और कराना प्रारम्भ किया।

बच्चों की सहभागिता से श्यामपट्ट पर ही उनके मनपसंद कार्य जैसे–खेलकूद, त्यौहार, पशु–पालन, पर्यावरण एवं स्वच्छता संबंधी, कला सम्बन्धी, आदि रूचिकर प्रकरण पर छोटे–छोटे बिन्दुवत लेख लिखवाने लगी। बच्चों को कुछ 6–10 शब्द देकर कहानी लेखन करवाने लगी। कुछ ही दिनों में बच्चों में स्वलेखन क्षमता का विकास दिखने लगा। मेरे मार्गदर्शन में बच्चे कहानी निबंध, एकांकी को बड़ी प्रसन्नता से अभिनय करके आनंदित हुए और उनकी मौखिक अभिव्यक्ति भी मुखर हुई। इस प्रकार, वे कहानियों को अपने शब्दों में सुनाने लगे जिससे उन्हें उसी कहानी का स्वलेखन करने में बहुत मदद मिली।

कक्षा–5 के बच्चे सितम्बर 2017 से "स्वलेखन कार्य" करना प्रारम्भ किए जिसमें नवम्बर 2017 तक 36% बच्चे सफल हुये और फरवरी 2018 तक करीब 44% बच्चों को "स्वलेखन कार्य" में सफलता मिली। बच्चे हिन्दी विषय के कहानी, कविता, निबंध आदि को अपने शब्दों में लिखने लगे साथ ही उन्हें विज्ञान और हमारा परिवेश विषय के कई प्रकरण पर "स्वलेखन कार्य" करने में सफलता मिली। आत्मविश्वास से परिपूर्ण ये बच्चे स्वरचित ढेरों कविताएँ, लेख एवं कहानियां लिख रहे है।

बच्चों की मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति परिष्कृत होने से अब वे किसी भी विषय के प्रकरण को सरलता से समझकर याद भी कर ले रहे हैं। "स्वलेखन कार्य" करने से बच्चों में अभिव्यक्ति की क्षमता, अधिगम संप्राप्ति व स्वाध्याय के प्रति रूचि में अभिवृद्धि स्पष्ट दिख रही है।

करूणा मौर्य (स0 अ0)
प्रा0वि0 टिकरी, काशीविद्यापीठ
वाराणसी

प्रेरक प्रसंग

शिकागो सम्मेलन

यह प्रसंग स्वामीजी द्वारा शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में दिये गए विश्व प्रसिद्ध भाषण से जुड़ा हुआ है।

आज वह शुभ घड़ी आ पहुँची। स्वामी विवेकानन्द देश–विदेश के प्रतिनिधियों के साथ मंच पर विराजमान हैं। हर धर्म के प्रतिनिधि को कुछ मिनटों में अपना परिचय देना है। एक–एक कर प्रतिनिधि उठते हैं, अपना परिचय देते हैं, बैठ जाते हैं, विवेकानन्द भी उठे और प्रथम शब्द उनके मुख से निकला– 'प्रिय, अमरीका के भाइयो एवं बहनो!' जैसे ही ये शब्द इनके मुख से निकले सभाकक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। कुछ लोग खड़े होकर इनका अभिनन्दन करने लगे। तालियों का स्वर बढ़ता ही जा रहा था। इसका शाश्वत संदेश है– दूसरों को समझो, ग्रहण करो, दूसरों की भावनाओं का आदर करना सीखो। हिन्दू को न बौद्ध बनने की आवश्यकता है, न बौद्ध को ईसाई, सभी धर्म अपनी जगह ठीक हैं। एक–दूसरे को जानने समझने की आवश्यकता है' उन्होंने अन्तिम शब्द कहे,

"Upon the banner in every religion will soon be written instead of resistance & Help and not fight assimilation and not destruction harmony and peace and not dissension."

'भाइयों और बहनों' का पावन सम्बोधन अमरीकावासियों के हृदय को छू गया। दूसरे दिन समस्त अखबारों के मुख्य पृष्ठ पर स्वामी विवेकानन्द का ही चित्र छपा था। रोमां रोलां (Romain Rolland) ने इसीलिए उद्घोष किया, "He had a genius of arresting words and burning phrases hammered out white hot in the forge of his soul so that they trans pierced thousands."

सद्विचार

स्वामी विवेकानंद के अनमोल वचन

धन्य हैं वे लोग जिनका जीवन दूसरों की सेवा में निकलता है।

कुछ मत पूछो, कुछ मत मांगो जो देना है वह दो, वह तुम तक वापस आयेगा इसके बारे में अभी से मत सोचो।

जिस दिन आपके सामने कोई समस्या ना आये आप यकीन मानिये आप गलत रास्ते पर सफर कर रहे हैं।

एक समय में एक ही काम करो और ऐसा करते समय उसमें अपनी आत्मा डाल दो, बाकी सब भूल जाओ।

हम वो है जो हमारी सोच ने बनाया है, इसलिए इस बात का ध्यान रखिए की आप क्या सोचते है।

शक्ति और विश्वास के साथ लगे रहो, निरंतर प्रयत्न करते रहो।

सत्यनिष्ठ, पवित्र और निर्मल रहो तथा आपस में ना लड़ो।

हर काम को तीन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है – उपहास, विरोध और स्वीकृति।

ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है।

उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते।

'संकलन'
आनन्द मिश्र (स0अ0)
प्रा.वि. तिगड़ा,
फखरपुर–बहराइच

द ब्लू अम्ब्रेला

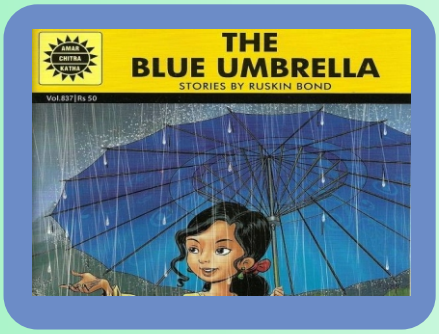

द ब्लू अम्ब्रेला भारत के प्रसिद्ध अंग्रेजी भाषा के लेखक रस्किन बांड का उपन्यास है। बाल साहित्य में इसका स्थान मील के पत्थर सरीखा है। ये कहानी है पहाड़ों में बसे एक छोटे से गाँव की जहाँ बिन्या नाम की एक बच्ची रहती थी। बिन्या के गाँव में एक दिन पर्यटक आते हैं और बिन्या से प्रसन्न होकर उसे एक बहुत ही सुंदर नीले रंग की छतरी दे जाते हैं। छतरी पाकर तो बिन्या के पैर जमीन पर ही नहीं टिकते हैं। ये सुंदर सी रंग–बिरंगी छतरी उसे गाँव में साधारण से असाधारण बना देती है। सभी साथियों में उसकी धाक जम जाती है। गाँव का ही एक चाय की दुकान चलाने वाला खत्री उस छतरी को पाने के लिए बिन्या को भाँति–भाँति के लालच देता है लेकिन बिन्या उसकी बातों में नहीं आती है। फिर खत्री चुपके से उसकी छतरी चुरा लेता है और उस पर रंग चढ़वाकर सबको ये बताता है कि ये छतरी उसने शहर से मँगायी है। लेकिन एक दिन बरसात में इस छतरी का रंग धुल जाता है और खत्री की असलियत सबको पता चल जाती है। बिन्या को उसकी छतरी वापिस मिल जाती है।

रस्किन बांड का यह उपन्यास बालमन की आकांक्षाओं और मस्तीपने को बहुत अच्छे से दर्शाता है। छतरी पाकर बिन्या के प्रसन्न हो जाने से छतरी खोने पर उसके मनोभावों का लेखक ने बहुत अच्छे से वर्णन किया है। इस उपन्यास पर द ब्लू अम्ब्रेला नाम से ही एक मूवी भी बन चुकी है जिसमें पंकज कपूर ने खत्री का किरदार बड़ी ही कुशलता से निभाया है। इस मानसूनी वातावरण में जब सभी को छतरी की आवश्यकता पड़ने वाली है ऐसे में भारी बारिश के समय अपने ड्राइंग रूम में इस पुस्तक को पढ़ने का आनन्द दुगुना हो जाएगा।

बच्चों का कोना

प्रेरक गीत

बच्चों पढ़ना–लिखना सीखो
जीवन में आगे बढ़ना सीखो।
जो नियमित पढ़ने जाते हैं
निश्चित ही विद्या पाते हैं ।
पढ़ने से जो करते प्यार
कभी न रहते वो बेकार।
चाहे जैसी बाधा आये
उससे कभी न जी घबराये।
बाधाओं का आना जाना
इनसे कभी न तुम घबराना।
पढ़ लिख कर शिक्षित बन जाना
अपना परचम तुम लहराना।
पढ़ लिख कर तुम बनो महान
मिलेगा तुम्हें खूब सम्मान।।

बिल्ली मौसी

कहते तुमको बिल्ली मौसी।
म्याऊँ म्याऊँ तुम हो करती।।
जब भी तुमको भूख सताती।
घर के अंदर तुम आ जाती।।
बैठ शान्त फिर घात लगाकर।
पकड़–पकड़ कर चूहे खाती।।
अगर मिले न चूहे तुमको।
घर का सारा दूध पी जाती।।
मम्मी की आहट पाते ही।
घर के अंदर तुम छिप जाती।।

ओमकार पाण्डेय
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय किरतापुर
विकास क्षेत्र––सकरन
जनपद––सीतापुर।।'

Day's Song

S,U,N, D,A,Y
संडे रविवार
छुट्टी है स्कूल की
मस्ती से है प्यार

M,O,N, D,A,Y
मंडे सोमवार
जाएँगे स्कूल को
होंगे होशियार

T,U,E,S, D,A,Y
ट्यूजडे मंगलवार
सबसे हम करेंगे
अच्छा व्यवहार

W,E,D, N,E,S, D,A,Y
वेंजडे बुधवार
खूब करें पढ़ाई

T,H, U,R,S, D,A,Y
थर्सडे गुरुवार
न करें लड़ाई

F,R,I, D,A,Y
फ्राइडे शुक्रवार
दूसरों की मदद को
हम रहें तैयार

S,A, T,U,R, D,A,Y
सैटरडे शनिवार
लेते हम विदाई

प्रशान्त अग्रवाल
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी
बरेली

सच्चे मित्र

पिता के देहांत के पश्चात आर्थिक स्थिति बिगड़ने के कारण मोहन और उसकी माँ गाँव वाले घर में आकर रहने लगे थे। मोहन का दाखिला भी गाँव के एक स्कूल में करवा दिया गया था।
पढ़ाई में अच्छा होने के बावजूद उसकी कक्षा के विद्यार्थी उसके साथ दोस्ती नहीं कर रहे थे क्योंकि मोहन उनकी तरह महंगा बैग, बोतल और टिफिन में बढ़िया बढ़िया खाना नही लाता था।

एक दिन मोहन निराश होकर अपनी माँ से बोला– ''माँ मुझे स्कूल जाना बिल्कुल अच्छा नही लगता क्योंकि वहाँ मेरा कोई दोस्त नहीं है।''

माँ ने चेहरे पर मुस्कान बिखेरते हुए कहा– बेटा कौन कहता है तुम्हारे दोस्त नहीं है, अगर सच्चे दोस्त बनाने हो तो तुम अपने आँगन में लगे पेड़–पौधों से दोस्ती कर लो।
मोहन ने उत्सुक होते हुए पूछा कि क्या पेड़ पौधे भी दोस्त बन सकते हैं? आखिर वो मेरी बात कैसे सुनेंगे?

माँ ने समझाया कि पेड़ पौधे तो मनुष्य के सच्चे दोस्त होते हैं वो हमेशा कुछ देते ही हैं और अगर तुम उनसे बातें करोगे तो वो बहुत ध्यान से तुम्हारी बातें सुनेंगे।

बस फिर क्या था उस दिन से रोज मोहन पेड़ों को पानी देता और उनसे अपने मन की सब बातें बोल देता।

एक बार स्कूल में ''फूल प्रतियोगिता'' का आयोजन होना था जिसके लिए एक हफ्ते बाद सब बच्चों को एक एक फूल लाना था और जिसका फूल सबसे सुंदर होगा उसे इनाम मिलना था।

मोहन ने आते ही ये बात अपने गुलाब के पौधे को बताई और रोज की तरह उसकी देखभाल में लग गया। गुलाब के पौधे ने भी मोहन की बात सुन ली हो जैसे, तभी प्रतियोगिता के ठीक एक दिन पहले एक बहुत सुंदर गुलाब निकला।

स्कूल में बच्चे बाजार से सुन्दर–सुन्दर फूल खरीद कर लाये थे लेकिन मोहन का फूल सबसे प्यारा लग रहा था।
कुछ देर में जब परिणाम घोषित हुआ तो मोहन का नाम प्रथम पुरस्कार के लिए पुकारा गया, पुरस्कार लेने के बाद उससे बताने को कहा गया कि वो इतना सुन्दर फूल कहाँ से लेकर आया।

मोहन ने माइक पर बताया कि क्लास के बच्चों द्वारा उससे न बात करने पर कैसे माँ के कहने पर उसने पेड़ पौधों से दोस्ती की। मोहन ने आगे कहा – ''मैंने पाया कि पेड़ हमारे सच्चे दोस्त होते हैं, वो मुझे खाने के लिए फल देते, सुन्दर फूलों की खुशबू से मेरा घर महक जाता मैं उनकी छाया के नीचे बैठकर पढ़ता और तो और मेरी दोस्ती उन पर रहने वाली गिलहरी और चिड़ियों से भी हो गई है और मेरे उसी दोस्त ने मुझे इस प्रतियोगिता के लिए फूल दिया। अब मुझे दुःख नहीं है कि कोई मुझसे बात नही करता।

मोहन की बातें सुनकर उसकी कक्षा के बच्चे शर्मिंदा हो गए और उसके स्टेज से उतरते ही दौड़ के सभी ने उसे गले लगा लिया।

उस दिन छुट्टी के बाद मोहन दौड़ते दौड़ते घर पहुँचा आखिर उसे अपने दोस्तों को अपने नए दोस्तों के बारे में जो बताना था।

ममता मिश्रा
सहायक अध्यापक
प्रा. वि. तेंदुआवन
ब्लॉक–चाका
जिला–इलाहाबाद

मास्टर भोलाराम

मास्टर भोलाराम के भोलेपन की मिसालें वैसे ही दी जाती हैं जैसे चालूपने में नटवरलाल की दी जाती हैं। मास्टर भोलाराम के भोलेपन का आलम ये है कि उनकी चप्पल भी उनसे झूठ बोल जाती है। बरसात में विद्यालय के रास्ते में पानी से तर–बितर पतली गलियों में जहाँ कीचड़ में पैर फँसा नहीं कि चप्पल का तला, बद्दी से कुट्टी कर जाता है और मास्टर साहब के पायजामे पर रह जाती है छींटदार निशानी। मास्टर भोलाराम पर कभी भी आसपास के वातावरण का नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा। कोई अपना कर्तव्य निभाये या न निभाये लेकिन मास्टर भोलाराम अपने कर्तव्य पालन में एकदम निपुण थे। समय से विद्यालय आना और बच्चों को पढ़ाना उनके लिए उसी प्रकार से महत्वपूर्ण था जैसे कि ऑक्सीजन का फेफड़ों में पहुँचना। इतना सब करने के बाद भी मास्टरजी को कभी चैन न रहा। क्योंकि मास्टरजी ने प्रतिदिन विद्यालय आने वाले मुन्नी, बंटी, राजू, पुष्पा..... को तो बहुत कुछ सिखा दिया था लेकिन खूब छुट्टी करने वालों रूपराम, कमल, हिना, बरखा.....कामिनी, जितेंद्र को पुस्तक पढ़ना भी नहीं सिखा पाये थे। मास्टरजी के विद्यालय में कुल 70 विद्यार्थी थे और मास्टर जी इसी आत्मग्लानि में जीते रहते थे कि जो स्तर उनके 23 श्रेष्ठ विद्यार्थियों का है उसका चौथाई भी उन 47 विद्यार्थियों का नहीं है जो पूर्णिमा के बाद अमावस्या को ही आते हैं। मास्टर भोलाराम के विद्यालय में नियमित आने वाले ये 23 बच्चे श्यामपट्ट पर ग्राफ तक बना लेते थे। लेकिन बाकि बच्चों के उपलब्धि स्तर के निम्न होने से मास्टरजी इन 23 बच्चों के बारे में भी किसी से चर्चा नहीं करते थे।

वहीं मास्टरजी के पड़ोसी विद्यालय के मास्टर चमक सिंह का रुतबा जनपद से लेकर प्रदेश तक में था। मास्टर चमक सिंह के यहाँ के दो बच्चे जोकि आयु के अनुसार अपनी कक्षाओं में तीन वर्ष पीछे थे पढ़ने में सबसे होशियार थे। मास्टर चमक सिंह इन्हीं बच्चों का प्रदर्शन अधिकारियों से लेकर सोशल मीडिया पर बड़े ठाट से करते थे। इन बच्चों की प्रतिभा देखकर कोई भी मास्टर चमक सिंह की प्रशंसा करे बिना नहीं रह पाता था। समय गुजरा और हर वर्ष ऐसे ही 2–3 बच्चों के नाम पर मास्टर चमक सिंह प्रसिद्ध होते रहे। एक दिन वो भी आया जब मास्टर चमक सिंह बड़ा सरकारी पुरस्कार भी पा गये और इधर मास्टर भोलाराम सर्व शिक्षा अभियान के 'सर्व' शब्द के भँवर में ऐसे फँसे कि जीवन भर अपनी उपलब्धियाँ अपने आप तक को न बता पाये।

–प्रांजल सक्सेना

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर(बीईओ) ने गहने बेचकर भीख माँगते बच्चों को पढ़ाया

'मैं बच्चों को किसी कीमत पर भीख मांगते हुए नहीं देखना चाहती'

मैं (नगरथनम्मा) बंगलूरू के साउथ ब्लॉक–दो में काम करने वाली एक ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर हूं। फरवरी, 2012 की बात है, जब मैं अपने काम के सिलसिले में एक सर्वेक्षण कर रही थी। काम के दौरान मैंने देखा कि कई परिवार ऐसे हैं, जो सड़कों के किनारे बदतर हालत में जीवन यापन कर रहे हैं। हालांकि हमारे देश के लिए ऐसी स्थिति कोई नई बात नहीं थी। लेकिन उस सर्वेक्षण का काम ही कुछ ऐसा था, जिसने मुझे उन परिवारों के बारे में सोचने पर विवश कर दिया। मेरी सबसे बड़ी चिंता उन परिवारवालों के बच्चों को लेकर थी। मेरे दिमाग में उनके लिए कुछ करने का खयाल आया। शिक्षा विभाग से जुड़ी होने के नाते मेरे लिए सबसे सुलभ काम था उन बच्चों को शिक्षित करना।

मैंने अपनी ही जैसी सोच रखने वाले कुछ अन्य लोगों से संपर्क किया। उन्होंने मेरी बातों में दिलचस्पी दिखाई। हमने तय किया कि हम इन बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा की व्यवस्था करेंगे, जोकि आगे चलकर इन्हें स्कूल तक पहुंचाने में मदद करेगी। हमारा काम एक तरह से बच्चों और स्कूल के बीच पुल की तरह था। हमने बच्चों को कन्नड़ और अंग्रेजी वर्णमाला, कविताएं, गीत आदि सिखाना शुरू किया। साथ ही हमने उन्हें अनुशासन और नैतिक शिक्षा की भी जानकारी दी। यह काम कठिन रहा। उनके लिए यह अपेक्षित ही नहीं था कि कोई उन्हें इस तरह प्यार से पढ़ा भी सकता है। शुरू में बच्चे हमें एकटक देखते रहते। उस वक्त हमे अंदाजा हुआ कि गरीबी ने उन्हें केवल शिक्षा से ही वंचित नहीं रखा था। नए माहौल से अभ्यस्थ होने के बाद बच्चों ने चीजों को बड़ी तेजी से सीखना शुरू किया।

इससे हमारा विश्वास बढ़ता गया कि ये बच्चे स्कूल में जरूर पढ़ेंगे। लेकिन यहां भी दिक्कत थी। एक तो वैसे भी इनके मां–बाप इन्हें इसलिए भी स्कूल भेजने को राजी नहीं होते थे कि अगर ये स्कूल गए, तो सड़कों पर भीख मांगकर या गुब्बारे बेचकर थोड़े–बहुत पैसे कौन कमाएगा? इनकी कमाई परिवार के लिए मायने भी रखती थी। दूसरा, इन बच्चों के घरवालों को कोई स्थायी ठिकाना नहीं था। इस वजह से भी स्कूल जाना इनके लिए मुश्किल था।

यह सब जानते हुए भी मैंने बच्चों के परिवारवालों को मनाना जारी रखा। शत प्रतिशत तो नहीं, लेकिन हमें सफलता मिली। हमने कुछ बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाया। अब हमारी अगली चुनौती थी कि स्कूल में ये बच्चे दूसरों बच्चों की तुलना में किसी तरह कमतर न आंके जाएं। साफ–सुथरे कपड़े, अच्छी आदतें इसके लिए पहली जरूरतें थीं। मैंने इस पर काम किया। अपनी संस्था के माध्यम से मैंने लगातार इन बच्चों को वे चीजें मुहैया कराईं, जो इनके लिए जरूरी थीं। जब बच्चों ने अपने स्कूली जीवन से तालमेल बिठा लिया और उन्हें पढ़ाई करने में मजा आने लगा, तब भी हमारी दिक्कतें कम नहीं हुईं।

कई परिवार अब भी अपने पाल्यों से वापस भीख मंगवाना चाहते थे। वे हमसे कहते कि बच्चों को पालने की जिम्मेदारी हमारी है और हमें इसके लिए पैसे चाहिए। मैंने उनकी समस्या को समझते हुए बच्चों के पोषण आदि के लिए भी मदद की। जब संस्था चलाने के लिए पैसे कम पड़ने लगे, तो मैंने अपने गहने तक बेच दिए। मैं बच्चों को किसी कीमत पर वापस भीख मांगते हुए नहीं देखना चाहती थी। मुझे खुशी है कि आज पच्चीस बच्चे अच्छे प्राइवेट स्कूलों में पढ़ रहे हैं, जिसके पीछे मेरा वह अभियान है, जो मैंने शिक्षा के अधिकार के तहत प्राइवेट स्कूल प्रबंधन के खिलाफ चलाया था।

–बीईओ नगरथनम्मा के विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

साभारः– अमर उजाला 30–05–2018

माह का मिशन

एक मुट्ठी मिट्टी अभियान

एकता की भावना से परिपूर्ण
सभी के महत्त्व को इंगित करता
सर्वसम्मान का प्रतीक
जात–पाँत, धर्म की दीवारों से ऊपर
छोटे–बड़े के भेद को मिटाता
एक मुट्ठी मिट्टी अभियान

मिशन शिक्षण संवाद सभी परिषदीय शिक्षकों का आवाह्न करता है एक मुट्ठी मिट्टी अभियान के लिए। एक मुट्ठी मिट्टी अभियान के लिए अपने विद्यालय के प्रत्येक छात्र के घर से मंगवाइए एक मुट्ठी मिट्टी जोकि उपजाऊ हो और उस मिट्टी को आपस में खूब मिलाइए। इतना मिलाइए कि एक घर की मिट्टी को दूसरे घर की मिट्टी से अलग ही न किया जा सके। फिर उस मिट्टी में वृक्षारोपण करिए।

विद्यालय का ये वृक्ष प्रतीक होगा ग्राम के प्रत्येक घर की एकता का। यह वृक्ष उगेगा उस मिट्टी में जिस मिट्टी में होगी प्रत्येक धर्म और प्रत्येक जाति के आँगन की मिट्टी की सोंधी सुगन्ध। इस वृक्ष के फलों में एकता की मिठास होगी तो फूलों में भाईचारे की सुंदरता। ज्यों–ज्यों ये वृक्ष बढ़ा होगा त्यों–त्यों इसका सम्मान करने वालों की संख्या बढ़ेगी। ये वृक्ष प्रत्येक ग्रामवासी को अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में हर्षित करता रहेगा।

यदि आप एक मुट्ठी मिट्टी अभियान चलाकर वृक्ष लगाएँगे तो ग्रामवासियों का एक भावनात्मक लगाव विद्यालय से हो जाएगा। प्रत्येक वर्ष सरकार की ओर से जुलाई में वृक्षारोपण अभियान चलता है। अबकि बार जब शिक्षकों को इस विषय में निर्देशित किया जाए तो हम सब मिलकर एक मुट्ठी मिट्टी अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण करेंगे। कितना सुन्दर होगा जब विद्यालय स्तर पर इस अभियान की सफलता के बाद प्रत्येक विकास खण्ड कार्यालय पर एक ऐसा वृक्ष हो जिसके लिए उस विकास खण्ड के प्रत्येक विद्यालय से एक मुट्ठी मिट्टी ली गयी हो और फिर जनपद स्तर पर एक ऐसा वृक्ष जिसमें प्रत्येक विद्यालय से एक मुट्ठी मिट्टी ली गयी हो।

आइए एक मुट्ठी मिट्टी से भरा हाथ बढ़ाइए और एकता का वृक्ष लगाइए।

कस्तूरबा विशेष

कस्तूरबा योजना

प्रतिवर्ष होने वाली बालगणना में सरकार ने पाया कि समाज में बालकों की अपेक्षा बालिकाएँ स्कूल कम जाती हैं, कारण पता करने पर विद्यालय का दूर होना, माता–पिता का कमाने के लिए पलायन, अनाथ या एकल परिवार की ही बालिकाओं को अधिकांशतः पाया गया। समानता के अवसर के उद्देश्य से बालिकाओं को भी शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हो, इसके लिए केंद्र सरकार ने एक योजना संचालित की जिसका नाम था 'कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय'।

आज ये विद्यालय भारत भर के लगभग हर प्रदेश में चल रहे है। जिले के हर विकासखण्ड में एक विद्यालय के संचालन की व्यवस्था है। उत्तर प्रदेश में 746 तथा समपूर्ण भारतवर्ष में 3600 कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय संचालित हैं। भारत में इन विद्यालयों में उन छात्राओं का प्रवेश किया जाता है जो 10–14 वर्ष आयु की हो और वह 'नेवर स्कूल' या 'आउट ऑफ स्कूल' हो। साथ ही उन छात्राओं को भी प्रवेश की व्यवस्था (विशेष अनुमति के आधार पर) की जाती है जो 'अनाथ' या 'एकल' हैं।

कस्तूरबा विद्यालय पूर्णतः निःशुल्क आवासीय सुविधाओं के साथ उच्च स्तर की शिक्षा व बालिकाओं में जीवन कौशल की शिक्षा के लिए जाने जाते हैं। वर्तमान में ये विद्यालय उच्च प्राथमिक स्तर कहीं–कहीं माध्यमिक रूप में संचालित हैं। सत्र 2018–19 के बजट में इन्हें उच्चीकृत करते हुए इण्टरमीडिएट तक करने की सूचना प्राप्त हो रही है।

इस प्रकार सरकार की इस योजना से ऐसी हजारों बेटियाँ जो शायद ये विद्यालय न होते तो निरक्षर ही रह जातीं वो आज पढ़ने–लिखने के साथ अनेकानेक कार्य विधाओं में अपना लोहा मनवा रही हैं।

इन विद्यालयों में प्रवेश के लिए डोर टू डोर सर्वे के बाद मोटिवेशन कैम्प लगाए जाते हैं जिनमें बालिकाओं के साथ उनके अभिभावकों को भी बालिका की शिक्षा,सुरक्षा, सुविधाओं को लेकर मोटिवेट किया जाता है।

चूंकि उक्त शर्त के अनुसार जिन छात्राओं का प्रवेश होता हैं उनमें से अधिकांश छात्राओं का शैक्षिक स्तर निम्न होता है। ऐसी छात्राओं के साथ ब्रिज क्लास से शिक्षण कार्य करते हुए इन विद्यालयों के टीचर्स कड़ी मेहनत और विभिन्न नवाचारों के प्रयोग के साथ शिक्षण कार्य करते हुए उस निम्न स्तर को सामान्य से विशेष बनाने तक अपनी पूरी ऊर्जा लगा देते हैं।

कस्तूरबा विद्यालय की पढ़ने वाली ये छात्राएँ जो कभी घर में छोटे बच्चों को खिलाना, माँ के काम में हाथ बटाना या माता–पिता के साथ बाहर चली जाती थीं आज वे ही बालिकाएँ इन विद्यालयों में रहकर पढ़ाई के साथ खेल, सांस्कृतिक प्रस्तुति, जीवन कौशल शिक्षा व अनेकों प्रतियोगिताओं में बाजी मार रही हैं।

इन छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सके इसके लिए सरकार इन विद्यालयों में हर उन सुविधाओं को देने का प्रयास करती है साथ ही समय –समय पर उच्च गुणवत्ता युक्त प्रशिक्षण विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं को दिया जाता है।

गुरु तेज बहादुर सिंह
जिला समन्वयक (बालिका शिक्षा)
हमीरपुर

कोमल है कमजोर नहीं तू

एक ओर पारिवारिक जीवन की जिम्मेदारियां तो दूसरी ओर एक जिम्मेदार शिक्षक होने का एहसास यही वो दो किनारे हैं, जिनके बीच मझधार में संघर्ष करती हुई दिखाई देती है एक महिला अध्यापक, यूँ तो पारिवारिक जिम्मेदारियों का उचित प्रकार से निर्वहन करना ही अपने आप में पूर्णकालिक कार्य है,परन्तु इसके साथ–साथ एक शिक्षक का कर्तव्य का भी निर्वहन करना निश्चित ही एक साहसिक कदम है।

परन्तु इस प्रकार की जीवन शैली में महिला अध्यापकों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है,बहुत सी इच्छाओं को दरकिनार करना पड़ता है।

एक महिला अध्यापक प्रातः काल सूर्योदय से पहले अपनी ड्यूटी पर तैनात दिखाई देती है। प्रातःकाल के अनेक कार्यों से एक युद्ध सा लड़ते हुये वह बड़े साहस से समय पर विद्यालय पहुँचने की जद्दोजहद में अनेक जोखिम भी उठा लेती है। विद्यालय पहुँचकर पुनः अपवंचित वर्ग के बेहद मासूम बच्चों के भविष्य को तराशने में जी जान से लग जाती है।

बेसिक शिक्षा विभाग की अनियमितताएं, कार्यालय से आने वाले आदेश, अधिकारियों की विशेष कार्यशैली और परिषदीय विद्यालयो में नाम मात्र की सुविधाएं। इन सब का सामना करते हुए वह किसी तरह अपने मूल कर्तव्य को पूरा कर पाती है।

पुरुष प्रधान समाज में महिला अध्यापक के प्रति 'मैडम जी' वाला रवैया उसे यह सवाल पूछने पर विवश कर देती है की क्या उसने शिक्षिका होकर कोई गलती तो नहीं कर दी है,क्या वह स्त्रियोचित सम्मान की अधिकारी नहीं है।

घर हो या विद्यालय शायद ही कोई पुरुष महिला अध्यापक के संघर्षपूर्ण जीवन शैली से इत्तेफाक रखता होगा।

अंत में यही कहना चाहूंगी की इन सब चुनौतियों को झेलती हुई,कभी गिरती,कभी संभलती हुई,कभी रोती और कभी हँसती हुई,अपने पूरे सामर्थ्य से सभी जिम्मेदारियो का निर्वहन करती हुई,हर चुनौती के सामने खुद एक मजबूत चुनौती बनती हुई,आज हर एक महिला अध्यापक निश्चित रूप से प्रशंसा,अपनत्व व सम्मान की अधिकारी है अपनी अद्वितीय क्षमताओं को प्रकट करती है।

नारी के लिए ही कहा गया है———

कोमल है कमजोर नहीं, शक्ति का नाम ही नारी है।
जग को जीवन देने वाली,मौत भी तुझ से हारी है।।।

प्रियंका गुप्ता
प्रा वि गोयना,
हापुड़

टीचर्स क्लब कॉर्नर

लखनऊ कार्यशाला

टीचर्स क्लब उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित मिशन शिक्षण संवाद की प्रदेश स्तरीय कार्यशाला भागीदारी भवन गोमती नगर लखनऊ में संपन्न

प्रमुख झलकियां

सर्वप्रथम कार्यक्रम का शुभारंभ 'श्रीमती ललिता प्रदीप संयुक्त शिक्षा निदेशक बेसिक' व 'डॉ पवन सचान प्राचार्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान लखनऊ' के द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया ।

तत्पश्चात टीचर्स क्लब के महामंत्री श्री अवनींद्र जादौन जी के द्वारा टीचर्स क्लब व मिशन शिक्षण संवाद के उद्देश्यों एवं महत्व पर बृहद चर्चा हुई।

डायट प्राचार्य लखनऊ श्री पवन सचान जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं मिशन शिक्षण संवाद से अत्याधिक प्रभावित हूँ और मेरे लिए इस ग्रुप से जुड़ना सौभाग्य की बात है। इस ग्रुप में बहुत से विचार प्रतिदिन मिलते हैं जो विभाग के लिए महत्वपूर्ण हैं। मिशन को बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

संयुक्त शिक्षा निदेशक श्रीमती ललिता प्रदीप जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मिशन ने बेसिक शिक्षा में बहुत परिवर्तन किया है अच्छा कार्य करने से हमें बहुत प्रसन्नता होती है हमें अच्छे विचारों को शेयर करना चाहिए।

द्वितीय सत्र में अपर शिक्षा निदेशक श्रीमती रूबी सिंह जी का टीचर्स क्लब के अध्यक्ष शशिभूषण व मिशन के संयोजक विमल कुमार के द्वारा बुके देकर अभिनंदन किया गया ।

श्रीमती रूबी सिंह जी ने बच्चों को मातृभाषा के द्वारा अधिक अध्ययन पर जोर दिया। उन्होंने मिशन की सराहना करते हुए और कहा कि बेसिक शिक्षा में सुधार के लिए शिक्षक को स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। ऐसा कार्य करो जो मिसाल बने, मिशन बेसिक शिक्षा के लिए वरदान साबित होगा और मिशन का प्रयास बहुत ही अच्छा है।

इसके पश्चात विभिन्न जनपदों से आये उत्कृष्ट अध्यापकों ने अपने –अपने स्कूलों की पीपीटी द्वारा प्रस्तुतिकरण दी ।

सायंकालीन सत्र में श्री सर्वेंद्र विक्रम सिंह शिक्षा निदेशक बेसिक ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सिद्धार्थनगर श्री मनीराम जी व सकारात्मक सोच से ओतप्रोत शिक्षकों के प्रिय खंड शिक्षा अधिकारी श्री मनोज बोस जी की उपस्थिति में 'मिशन शिक्षण संवाद की वेबसाइट लांच' की गई।

बेसिक शिक्षा अधिकारी मनीराम जी ने कहा कि मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षकों का कोई दूसरा जवाब नहीं है मिशन ने स्कूल को कॉन्वेंट व पब्लिक स्कूल बना दिया है इसलिए मिशन का धन्यवाद देते हैं।

'बेसिक शिक्षा निदेशक श्री सर्वेंद्र विक्रम सिंह' ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यहां पर अच्छा काम करने वालों को पहचानकर बुलाया गया है यह सभी सेल्फ मोटिवेटेड हैं।
आप सभी ने अच्छा काम करने की सोची और अच्छा सिखाने से खुशी मिलती है आज मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि सही समय पर सही जगह हूं इसके लिए मिशन का आभार ।

इसके पश्चात सभी जनपदों से आए हुए उत्कृष्ट अध्यापकों व मिशन शिक्षण संवाद के समूह एडमिन को प्रशस्ति पत्र व मोमेंटो देकर डायरेक्टर सर ने सम्मानित किया। सभी जनपदों के ग्रुप एडमिन ने अपने–अपने जनपदों के अच्छे स्कूलों की रिपोर्ट निदेशक बेसिक शिक्षा को सौंपी ।

इस सफल आयोजन हेतु मिशन शिक्षण संवाद परिवार टीचर्स क्लब के महामंत्री श्री अवनींद्र जादौन जी , अध्यक्ष श्री शशिभूषण जी, सुरेश जायसवाल जी, श्री प्रांजल दुबे जी एवं समस्त टीम का हृदय तल की गहराइयों से आभार ज्ञापित करता है एवं हम सभी आशा करते हैं कि टीचर्स क्लब का सहयोग भविष्य में भी इसी प्रकार से प्राप्त होता रहेगा।

धन्यवाद
टीम मिशन शिक्षण संवाद

सामान्य ज्ञान सामान्य ज्ञान प्रश्न

1.पृथ्वी का एक मात्र प्राकृतिक उपग्रह कौन सा है?
उत्तर – चन्द्रमा
2. 'गाँधी' फिल्म में गाँधी की भूमिका निभाने वाला?
उत्तर – बेन किंग्सले
3. शिक्षक दिवस कब होता है?
उत्तर – 5 सितम्बर
4. जापान पर परमाणु बम किस सन मे गिराया गया था?
उत्तर – 1945 में
5. भांखड़ा नांगल बाँध कौन सी नदी पर है?
उत्तर – सतलज
6. भारत का राष्ट्रीय पुष्प कौन सा है?
उत्तर – कमल
7. धनराज पिल्लै किस खेल से जुडे है?
उत्तर – हॉकी
8. UNO की सुरक्षा परिषद् में कितने स्थाई सदस्य है ?
उत्तर – 5
9. सिंधु सभ्यता का कौन सा स्थान अब पाकिस्तान में है ?
उत्तर – हड़प्पा
10. चौथ नामक कर किसके द्वारा लिया गया था?
उत्तर – मराठों द्वारा
11. मुगल बादशाहो का सही क्रम?
उत्तर – बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहांगीर

12. 'भूदान आंदोलन' की शुरूआत करने वाला कौन थे?
उत्तर – विनोबा भावे
13. भारत में अंग्रेजी शिक्षा की शुरूआत किसने की थी?
उत्तर – लार्ड मैकाले
14. 'फ्लाइंग सिख' के नाम से कौन मशहूर है?
उत्तर – मिल्खा सिंह
15. नींबू और सन्तरे में कौन सा विटामिन है?
उत्तर – विटामिन 'सी'
16. उदय शंकर किस विषय से सम्बंधित है?
उत्तर – नृत्य
17. संविधान के प्रारूप समिति के चेयरमैन थे?
उत्तर – डॉ. भीम राव अम्बेडकर
18. त्रि–स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में सबसे ऊँचा पद किसका होता है?
उत्तर – जिला परिषद
19. लक्षद्वीप की राजधानी कहाँ है?
उत्तर – कवरत्ती
20. श्रीलंका की मुद्रा कौन सी है?
उत्तर – रुपया
21. 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' पुस्तक किसने लिखी?
उत्तर – जवाहर लाल नेहरू

22. 'गुरुत्वाकर्षण' की खोज करने वाला?
उत्तर – न्यूटन
23. नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाला पहला भारतीय कौन?
उत्तर – रविन्द्र नाथ टैगोर
24. द्रोणाचार्य पुरस्कार किससे सम्बंधित है?
उत्तर – खेल
25. खजुराहो किस राज्य मे स्थित है?
उत्तर – मध्य प्रदेश

शिक्षण तकनीकी

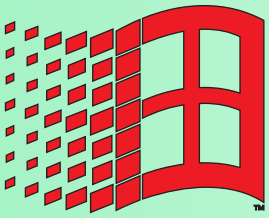

NCERT Solution

एनसीईआरटी पाठ्यक्रम में छात्रों की पढाई को ध्यान में रखते हुए, एनसीईआरटी समाधान अप्लीकेशन तैयार किया गया है।

इस ऐप में सभी एनसीईआरटी पुस्तक के सोल्यूशन और लोकप्रिय पुस्तकें शामिल हैं इस ऐप की सबसे अच्छी बात यह है कि इसमे कोई विज्ञापन नहीं है।

जिससे छात्रों को बेहतर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। यह ऐप गूगल प्ले स्टोर से मुफ्त में डाउनलोड कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण दिवस

Important days of July – जुलाई माह के महत्वपूर्ण दिवस

1 जुलाई – राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस – National Doctor's Day
4 जुलाई – स्वामी विवेकानंद स्मृति दिवस – Swami Vivekananda Memorial Day
7 जुलाई – महेंद्र सिंह धोनी जन्म दिवस – Birthday of Mahendra Singh Dhoni
11 जुलाई – विश्व जनसंख्या दिवस – World Population Day
12 जुलाई – मलाला दिवस – Malala Day
18 जुलाई – नेल्सन मंडेला दिवस – Nelson Mandela Day
23 जुलाई – बाल गंगाधर तिलक जन्मदिवस – Bal Gangadhar Tilak birthday
चन्द्रशेखर आजाद जन्मदिवस – Chandrashekhar Azad birthday
26 जुलाई – कारगिल विजय दिवस – Kargil Victory Day
27 जुलाई – डॉ ऐ.पी.जे अब्दुल कलाम स्मृति दिवस – Dr. A.P.J. Abdul Kalam Memorial Day
28 जुलाई – विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस – World Nature Conservation Day
31 जुलाई – मुंशी प्रेमचंद का जन्मदिवस – Munshi Premchand's birthday

मिशन शिक्षण संवाद

जुलाई 2018

जुलाई	2018				
रवि.	1	8	15	22	29
सोम.	2	9	16	23	30
मंगल.	3	10	17	24	31
बुध.	4	11	18	25	
गुरु.	5	12	19	26	
शुक्र.	6	13	20	27	
शनि.	7	14	21	28	

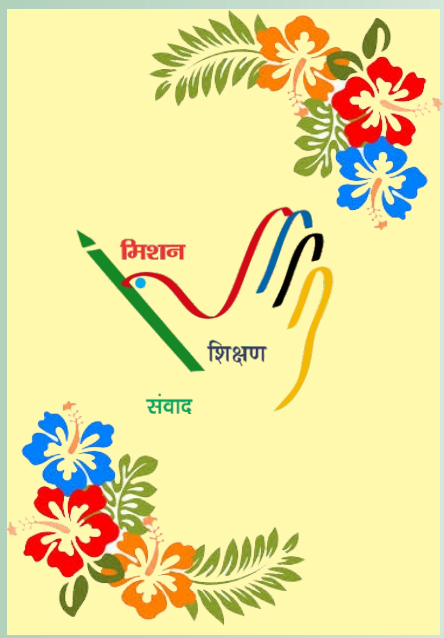

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान

Follow us on:

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gamil.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6– व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7– ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8– वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात